एकल अविवाहित महिलाओं की समस्याएं तथा चुनौतियाँ

डॉ0 ज़किया रफत
एसो0 प्रोफे0 एवं अध्यक्षा, समाजशास्त्र विभाग
आर0बी0डी0 स्नात्कोत्तर महिला महाविद्यालय, बिजनौर
Email :drzakiyarafat@gmail.com

सारांश

भारतीय समाज में एकल महिलाओं की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ रही है। आज एकल महिलाओं में विवाह इच्छुक न केवल ऐसी महिलाएं हैं जिनका किन्हीं कारणों वश विवाह नहीं हो पाया और वे अकेले रहने को विवश है बल्कि उच्च शिक्षित, उच्च व्यवसायों में संलग्न वे महिलाएं भी हैं जो अपने कैरियर व उन्नति को प्राथमिकता देती है। स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करना चाहती हैं और सहारे के नाम पर किसी अनचाहे पुरुष को पति व पार्टनर के रूप में स्वीकार करने की बजाय एकल रहना पसन्द करती है। वर्षों पहले की अपेक्षा उन्हें समाज में स्वीकृति भी मिल रही है परन्तु फिर भी उनके समक्ष अनेक समस्याएं आ रही है। प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख उददेश्य उनकी समस्याओं को जानना है।

प्रस्तावना

भारतीय समाज में गत दो दशक में एकल महिलाओं की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार, हमारे देश की कुल जनसंख्या का 7.4 प्रतिशत भाग अविवाहित, तलाकशुदा, विधवा महिलाओं का था जो वर्ष 2011 तक बढ़कर 21 प्रतिशत तक पहुंच गया है।[1]

9 मार्च 2014 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के अवसर पर ''इंडिया बोल'' के मंच पर एकल महिलाओं के मुददों को चर्चा का विषय बनाया गया तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं की ओर समाज व सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया।[2] यद्यपि भारतीय समाज में विवाह और परिवार दोनों महत्वपूर्ण संस्थाएं है। महिला व पुरुष दोनों को विवाह करना अनिवार्य है। हिन्दू धर्म शास्त्रों के अनुसार, ''यह एक संस्कार है'' हमारे समाज में अकेले रहने को हतोत्साहित किया जाता है। लड़के व लड़कियों की आयु 25–26 वर्ष होते ही उनका विवाह कर दिया जाता है। जो व्यक्ति विवाह नहीं करना चाहते, उनके चरित्र को शंका की दृष्टि से देखा जाता है।

मनुस्मषति में एक महिला के जीवन को इस प्रकार से रेखांकित किया गया है कि जब वह बालिका हो तो पिता के, युवा होने पर पति के तथा वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहे। यानि उसका अपना स्वतन्त्र अस्तित्व कुछ नहीं है। यह विचार हमारी सोच पर इतना हावी है कि हम आज भी इससे बाहर नहीं निकलना चाहते।[3] भारत में अकेली महिला का रहना बहुत कठिन है। वैसे तो आम आदमी अपने को आधुनिक दिखाने का प्रयास करते हैं परन्तु उनकी विचार धारा

बहुत संकीर्ण है। अभी भी वे उसे बेचारी बेसहारा, समझकर उसके लिए अनेक समस्याएं खड़ी करते हैं। उसे सदैव अपने परिवार पर बोझ समझा जाता है। वह कितना भी कमा लें, कुछ भी कर लें लेकिन उसे सारे निर्णय परिवार की निगरानी में करने पड़ते हैा समाज एकल रहने को मान्यता नहीं देता।[4]

परन्तु कभी–कभी परिस्थितिवश भी कुछ महिलाएं अविवाहित रह जाती है। कृष्णा कुमारी[5] (1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक परिस्थितियां, वित्तीय बाधाएं तथा कुछ कारकों के संयोजन ने बड़ी संख्या में महिलाओं को अकेले रहने के लिए प्रभावित किया। इसी प्रकार जेठानी[6] (1994) ने भी निष्कर्षित किया कि वित्तीय, शारीरिक और कुछ पारिवारिक बाधाएं वास्तव में महिलाओं के अकेले रहने के लिए महत्वपूर्ण कारक है।

प्रकाश[7] (1991) के अनुसार, जहां तक एकलता का सम्बन्ध है। यह दो प्रकार की है, स्वैच्छिक और बाध्यता मूलक। बहुत सी शिक्षित कार्यरत महिलाएं जो कैरियर और उन्नति को महत्व देती है, अकेले रहना पसन्द करती है।

वर्तमान समाज में तेजी से बदलते दौर में एकल महिलाओं को स्वीकर्षति मिलने लगी है। शर्मा (1996) तर्क देते है कि ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में नगरीय केन्द्रों में एकल महिलाओं की संख्या में निरन्तर वर्षद्धि हो रही है। 21वीं शताब्दी में एक पुरूष या महिला अकेले रह सकते है चाहे वह समाज के अधिक उच्च मूल्यवान सदस्य हो अथवा सामान्य। आज बहुत वर्ष पहले की अपेक्षा अकेली महिलाएं अधिक स्वीकार्य है। एकल महिलाएं कितने भी उच्च पद पर क्यों न हो? वे कितना भी धन अर्जित क्यों न करें वे बाह्य तौर पर अत्यधिक खुश हो, जीवन में सफल हो तब भी उनके समक्ष अनेक सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, पारिवारिक, आवासीय आदि समस्याएं आती है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र उनकी समस्याओं को जानने का लघु प्रयास है।

उददेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्न उददेश्य हैः–

1. एकल अविवाहित महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. एकल अविवाहित महिलाओं की समस्याओं को ज्ञात करना।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु सर्वेक्षण कार्य पश्चिमी उत्तर प्रदेश में स्थित जनपद बिजनौर के बिजनौर नगर में किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध पत्र अन्वेषणात्मक तथा वर्णनात्मक शोध प्ररचना के अन्तर्गत किया गया है।

निदर्शन

प्रस्तुत अध्ययन हेतु बिजनौर नगर की 35 वर्ष से लेकर 50 वर्ष से अधिक आयु की एकल अविवाहित 30 इकाईयों का चयन उददेश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है। उपर्युक्त

चयनित इकाईयों से सूचनाओं व आंकड़ों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के प्रयोग द्वारा किया गया है।

उपलब्धियां

प्रस्तुत शोध पत्र की निम्न उपलब्धियां रही है।

एकल अविवाहित महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति

अध्ययन हेतु चयनित इकाईयों की निम्न सामाजिक–आर्थिक स्थिति पायी गयी।

आयु :

तालिका : 1

क्र0सं0	आयु	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	35 – 40	9	30.0
2	40 – 45	8	26.7
3	45 – 50	7	23.3
4	50 से अधिक	6	20.0
	कुल	**30**	**100**

तालिका 1 के अवलोकन से इकाईयों की आयु के सम्बन्ध में ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 30 प्रतिशत इकाईयां 35 से 40 वर्ष आयु समूह से है जबकि 26.7 प्रतिशत इकाईयां 40 से 45 वर्ष आयु समूह से 23.3 प्रतिशत इकाईयां 45 से 50 वर्ष आयु समूह से सम्बन्धित है तथा 20 प्रतिशत इकाईयां 50 वर्ष से अधिक आयु की है।

शिक्षा :

तालिका : 2

क्र0सं0	शैक्षिक स्तर	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	5वीं	2	6.7
2	8वीं	2	6.7
3	10वीं	2	6.7
4	12वीं, ए0एन0एम0	3	10.0
5	बी0ए0 / बी0एस0सी0 / बी0एड0	**8**	26.6
6	एम0ए0, बी0एड0	**5**	16.7
7	एम0ए0, पी0एच0डी0	**8**	26.6
	योग	**30**	**100**

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि 6.7 प्रतिशत इकाईयों ने 5वीं तक, 6.7 प्रतिशत इकाईयों ने 8वीं तक, 6.7 प्रतिशत इकाईयों ने 10वीं तक शिक्षा प्राप्त की है। 10 प्रतिशत इकाईयों ने 12वीं तक शिक्षा प्राप्त करके ए0एन0एम0 की ट्रेनिंग भी ली है। सर्वाधिक 26.6 प्रतिशत इकाईयों ने बी0ए0 / बी0एस0सी0 तथा बी0एड0 तक शिक्षा ग्रहण की है। सर्वाधिक 26.6 प्रतिशत इकाईयों की शिक्षा एम0ए0, पी0एच0डी0 है। 16.7 प्रतिशत इकाईयां एम0ए0, बी0एड0 तक शिक्षा प्राप्त है। उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण से पता चलता है कि अधिकांश इकाईयां उच्च शिक्षित है।

व्यवसाय

तालिका – 3

क्र0सं0	व्यवसाय	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	प्रोफेसर्स	5	16.7
2	लैक्चरर	6	20.0
3	स्कूल टीचर्स	11	36.7
4	नर्स	3	10.0
5	एन.जी.ओ.	**1**	3.3
6	टेलरिंग	**4**	13.3
	योग	**30**	**100**

तालिका 3 से अध्ययन इकाईयों की व्यवसायिक स्थिति देखने पर स्पष्ट होता है कि 16.7 प्रतिशत इकाईयां प्रोफेसर 20 प्रतिशत इकाईयां लैक्चरर है। सर्वाधिक 36.7 प्रतिशत इकाईयां स्कूल टीचर हैं। जबकि 10 प्रतिशत इकाईयां नर्स है, 3.3 प्रतिशत इकाईयां एन0जी0ओ0 चलाती है तथा 13.3 प्रतिशत इकाईयां सिलाई का कार्य करती है।

उपरोक्त तालिका के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश इकाईयां शिक्षण व्यवसाय से सम्बन्धित है।

आय

तालिका – 4

क्र0सं0	आय (रूपयों में)	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	रूपये 1000 – 25,000	16	53.4
2	रूपये 25,000 – 50,000	8	26.7
3	रूपये 50,000 – 75,000	1	3.3
4	रूपये 75,000 – 1,00,000	1	3.3
5	रूपये 1,00,000 से अधिक	**4**	13.3
	योग	**30**	**100**

तालिका 4 के अवलोकन से इकाईयों की आय के विषय में ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 53.4 प्रतिशत इकाईयों की आय रू. 1000 से रू. 25000 के मध्य है। 26.7 प्रतिशत इकाईयां रू. 25000 से रू. 50,000 के आय समूह से है। 3.3 प्रतिशत इकाईयों की आय रू0 50,000 से रू. 75000 के मध्य, 3.3 प्रतिशत इकाईयों की आय रू. 75000 से रू. 100000 तक है। इसके अतिरिक्त 13.3 प्रतिशत इकाईयों की आय रू0 100000 से अधिक है।

निवास :

तालिका – 5

क्र0सं0	निवास	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	अकेले अपने मकान में	2	6.7
2	अकेले किराये के मकान में	4	13.3
3	माता – पिता के साथ	6	20.0
4	माता – पिता के घर में अविवाहित भाई/बहन के साथ	8	26.7
5	विवाहित बहन/भाई के परिवार के साथ	**7**	23.3
6	हॉस्टल / पी0जी0	**3**	10.0
	योग	**30**	**100**

तालिका 5 के अवलोकन से इकाईयों के निवास के विषय से स्पष्ट होता है कि 6.7 प्रतिशत इकाईयां अकेले अपने घर में, 13.3 प्रतिशत इकाईयां अकेले किराये के मकान में, 20 प्रतिशत इकाईयां माता–पिता के साथ रहती है। सर्वाधिक 26.7 प्रतिशत इकाईयां माता–पिता के घर में अविवाहित भाई–बहनों के साथ रहती है तथा 23.3 विवाहित बहन/भाई के परिवार के साथ रहती है। जबकि 10 प्रतिशत इकाईयों हास्टल/पी.जी.में रहती है।

एकल अविवाहित महिलाओं का विवाह न होने के कारण

तालिका – 6

क्र0सं0	कारण	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	आर्थिक	6	20.0
2	उचित विवाह साथी न मिल पाना	5	16.7
3	बीमार माता/पिता/बहन/भाई के निर्वहन का दायित्व	2	6.7
4	प्रेम में असफलता	1	3.3
5	परिवार वालों की विवाह के प्रति बरती गयी लापरवाही	**4**	13.3
6	असुन्दरता	**3**	10.0
6	जन्म कुण्डली में दोष	**1**	3.3
7	महत्वकांक्षी और स्वतन्त्र प्रवृत्ति के कारण विवाह नहीं किया।	**8**	26.7
	योग	**30**	**100**

तालिका 6 का अवलोकन करने से इकाईयों के विवाह न करने के कारणों के सम्बन्ध में ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 20 प्रतिशत महिलाओं का विवाह आर्थिक कारणों से, 16. 7 प्रतिशत इकाईयों का उचित विवाह साथी न मिल पाने से, 6.7 प्रतिशत इकाईयों का घर में बीमार माता/पिता/भाई/बहन के निर्वहन के दायित्व के कारण नहीं हो सका। 3.3 प्रतिशत महिलाओं ने प्रेम में असफल होने के कारण विवाह नहीं किया। 13.3 प्रतिशत महिलाओं के

परिवार वालों द्वारा विवाह के प्रति बरती गयी लापरवाही, 10 प्रतिशत महिलाओं की असुन्दरता, 3.3 प्रतिशत महिलाओं की जन्म कुण्डली में दोष के कारण विवाह नहीं हो पाया। जबकि 26. 7 प्रतिशत महिलाओं ने अपनी स्वतन्त्र प्रवर्षत्ति तथा महत्वकाक्षाओं को पूरा करने के कारण स्वयं विवाह नहीं किया।

एकल अविवाहित महिलाओं की समस्याएं

तालिका – 7

क्र0सं0	समस्याएं	इकाई संख्या	प्रतिशत
1	**मनोवैज्ञानिक :**		
	एकाकीपन	4	13.3
	मानसिक तनाव	6	20.0
	असुरक्षा की भावना	12	40.0
	उददेश्यहीन जीवन	8	26.7
	योग	**30**	**100**
2	**आर्थिक :**		
	समस्या है	16	53.3
	समस्या नहीं	14	46.7
	योग	**30**	**100**
3	**आवासीय :**		
	समस्या है	14	46.7
	समस्या नहीं	16	53.3
	योग	**30**	**100**
4	**पारिवारिक :**		
	परिवार के सदस्यों का उपेक्षापूर्ण व्यवहार	6	20.0
	परिवार के सदस्यों का पारिवारिक निर्णयों में परामर्श न लेना	6	20.0
	परिवार में अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत न कर पाना	7	23.3
	परिवार द्वारा हित पूर्ति का साधन समझना	11	36.7
	योग	**30**	**100**
	सामाजिक :		
	समाज द्वारा अविवाहितों को मान्यता न देना	**8**	26.7
	नातेदारों/परिचितों/सहकर्मियों/पड़ौसियों द्वारा हेय समझना तथा ताने कसना	**10**	33.3
	चरित्र को शंका की दृष्टि से देखना	**5**	16.7
	पड़ौसी/नातेदारों द्वारा सामाजिक सम्बन्ध न रखना	**7**	23.3
	योग	**30**	**100**

तालिका 7 से इकाईयों की समस्याओं का अवलोकन करने पर पता चलता है कि इकाईयों के समक्ष मनोवैज्ञानिक समस्याओं के अन्तर्गत 13.3 प्रतिशत को एकाकीपन का अनुभव होता है। 20 प्रतिशत को मानसिक तनाव रहता है। सर्वाधिक 40 प्रतिशत को असुरक्षित भविष्य से डर तथा 26.7 प्रतिशत इकाईयों को अपना जीवन उददेश्यहीन लगता है।

आर्थिक समस्याओं को देखने पर स्पष्ट होता है कि 53.3 प्रतिशत इकाईयों के समक्ष आर्थिक समस्याएं थी जबकि 46.7 प्रतिशत इकाईयों को ऐसी कोई समस्या नहीं थी।

आवासीय समस्याओं को देखने पर ज्ञात होता है कि 46.7 प्रतिशत इकाईयों के समक्ष

आवास की समस्या थी जबकि 53.63 प्रतिशत को इस प्रकार की कोई समस्या नहीं थी।

पारिवारिक समस्याओं के अवलोकन से पता चलता है कि 20 प्रतिशत इकाईयों को अपने परिवार के सदस्यों के उपेक्षापूर्ण व्यवहार से, 20 प्रतिशत को परिवार के सदस्यों के पारिवारिक निर्णयों में परामर्श ने लेने से, 23.3 प्रतिशत को परिवार में अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत न कर पाने से तथा सर्वाधिक 36.7 प्रतिशत को परिवार के सदस्यों द्वारा हित पूर्ति का साधन समझने को लेकर समस्याएं थी। सामाजिक समस्याओं को देखने पर ज्ञात होता है कि 26.7 प्रतिशत इकाईयों को समाज द्वारा मान्यता नहीं दी जाती। 33.3 प्रतिशत के परिचित/नातेदार/पड़ौसी/सहकर्मी उन्हें हेय समझते है तथा उन पर ताने कसते है। 16.7 प्रतिशत इकाईयों को कहा कि उनके चरित्र को शंका की दृष्टि से देखा जाता है। 23.3 इकाईयों के अनुसार, पड़ौसी/नातेदार उनसे सम्बन्ध नहीं रखना चाहते।

निष्कर्ष

बिजनौर नगर की 35 वर्ष से लेकर 50 वर्ष से अधिक आयु की अविवाहित एकल महिलाओं पर किये गये अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए। अधिकतर इकाईयां 35 से 40 वर्ष समूह की है। सर्वाधिक इकाई उच्च शिक्षित व शिक्षण कार्य से सम्बन्धित है जिनमें सर्वाधिक की आय रू. 1000 से रू. 25000 तक है। इनमें से अधिकांश माता–पिता भाई बहन के साथ रहती है। उनके विवाह न होने के कारण आर्थिक है तथा वे अनेक आवासीय, सामाजिक, पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं का सामना करती है।

संदर्भ

1. क्यों डेवलपर्स को एकल महिला को आवास उपलब्ध कराने पर। https:// www.praptiger.com>post.
2. *अकेली औरतों की समस्याएं*–बी.बी.सी. न्यूज हिन्दी https://www.bbc.com, 9 march 2014.
3. *अकेली महिलाओं की बढ़ती समस्याएं संघर्ष जारी है।* www.virarjun.com> रविवारीय 22 दिसम्बर 2012.
4. *अकेली भारतीय महिला को होने वाली समस्याएं।* https:// hindiboldsky.com>....>pulse 11 Dec. 2014.
5. कृष्णा कुमारी, एन.एस. (1987) *स्टेट्स ऑफ सिंगल वुमैन इन इंडिया, ए स्टडी ऑफ द स्पिनस्टर्स, विडोस एण्ड डाइवोर्सिज,* नई दिल्ली, उप्पल पब्लिशिंग हाउस
6. जेठानी, उर्मिला (1994), *सिंगल वुमैन,* जयपुर, रावत पब्लिकेशंस।
7. प्रकाश इन्दू, (1991), *इंडियन वुमैन : द पावर ट्रैप्ड,* नई दिल्ली, गैलेक्सी पब्लिकेशंस।